वाणिज्य शिक्षण के उद्देश्य

[AIMS OF TEACHING OF COMMERCE]

परिचय—प्रकृति में मनुष्य एक बुद्धिमान प्राणी है, जो एक सामाजिक वातावरण में अपना जीवन-निर्वाह करता है तथा अनेक क्रियाओं को सम्पन्न करता है। मनुष्य की सभी क्रियायें बिना उद्देश्य के नहीं होती हैं अर्थात् मनुष्य की सभी क्रियाओं की पृष्ठभूमि में कोई न कोई लक्ष्य अथवा उद्देश्य अवश्य होता है, जो उसे उस कार्य को करने के लिये प्रेरित करता है तथा उसका मार्गदर्शन भी करता है। इस तथ्य को स्पष्ट करते हुये महान् शिक्षाशास्त्री ड्यूवी ने कहा कि उद्देश्य वह पूर्वयोजित लक्ष्य है, जो किसी भी कार्य को करने के लिये प्रेरित करता है अथवा उसे संचालित करता है, क्योंकि मनुष्य तथा शिक्षा के मध्य पूर्वकाल से ही घनिष्ठ सम्बन्ध रहे हैं तथा शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति एवं समाज के विकास का भी एक साधन है। अतः उद्देश्यहीन शिक्षा से व्यक्ति का विकास सम्भव नहीं है। इसके अतिरिक्त उद्देश्यविहीन वाणिज्य से समाज को भी कोई लाभ नहीं होता है। रिवालिन के अनुसार, "शिक्षा एक अर्थपूर्ण और नैतिक क्रिया है।" इनके अनुसार शिक्षा का अर्थ स्पष्ट किये बिना मानव तथा समाज दोनों का ही विकास सम्भव नहीं है। अतः उद्देश्यहीन शिक्षा के बारे में सोचना भी व्यर्थ है। मनुष्य एक चिन्तनशील प्राणी है, जो किसी भी कार्य को करने से पूर्व अपने मस्तिष्क में उस कार्य की पूर्व योजना का निर्माण करता है तथा उस कार्य को करने के लिये अग्रसर होता है। अतः प्रत्येक मानवीय क्रियाओं का एक उद्देश्य होता है। इन उद्देश्यों के अनुसार ही वह उस कार्य को पूर्ण करता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जैसा उद्देश्य होगा, वैसी ही क्रियायें होती हैं। शिक्षण को सुचारू एवं व्यवस्थित ढंग से चलाने के लिये उद्देश्यों को निर्धारित करना अति आवश्यक है। उद्देश्य ही शिक्षार्थी को अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये अभिप्रेरित करता है तथा लक्ष्य प्राप्ति तक उसे सक्रिय बनाये रखता है। आज की शिक्षा उद्देश्यनिष्ठ होती है, जिसमें शिक्षण से पूर्व उद्देश्यों को भली-भाँति निर्धारित किया जाता है। वाणिज्य की शिक्षा के उद्देश्य आर्थिक स्त्रोत, आर्थिक स्थिति, भौगोलिक वातावरण एंव परिस्थितियाँ तथा सामाजिक विचारधाराओं द्वारा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रमाणित होते हैं।

एन० सी० ई० आर० टी० की पुस्तकों में उद्देश्यों की परिभाषा देते हुये लिखा गया है कि—"उद्देश्य वह बिन्दु अथवा लक्ष्य है, जिसकी दिशा में कार्य को अग्रसर किया जाता है तथा जिसके अनुसार किसी कार्य के माध्यम से पूर्व कोई भी नियंत्रित परिवर्तन लाया जा सकता है।"

Scanned by TapScanner

उद्देश्य के अर्थ को अधिक स्पष्ट करने के लिये उद्देश्य/लक्ष्य तथा प्राप्य उद्देश्य का अलग-अलग अर्थ तथा दोनों में प्रमुख अन्तर को समझ लेना अति आवश्यक है। इसे निम्न प्रकार से स्पष्ट किया गया है—

उद्देश्य (लक्ष्य) का अर्थ
(MEANING OF AIMS)

उद्देश्य का शाब्दिक अर्थ सन्धि-विच्छेद करने पर उत् + दिश + य होता है। इसमें 'उत्' से अभिप्राय 'ऊपर की ओर' तथा 'दिश' से अभिप्राय 'दिशा स्पष्ट करने' से है। इस प्रकार उद्देश्य वे हैं जो गन्तव्य तक पहुँचने की दिशा बदलाते हैं व जिन्हें भावी जीवन के लिये निर्धारित किया जाता है। इसके अर्थ को सपष्ट करते हुये **कॉर्टर वी० गुड** ने लिखा है, "उद्देश्य पूर्व निर्धारित साध्य होता है जो किसी कार्य या क्रिया का मार्ग-दर्शन करता है।"

"Aim is a foreseen and that gives direction to an activity."

—Carter V. Good

प्राप्य उद्देश्य का अर्थ
(MEANING OF OBJECTIVES)

प्राप्य उद्देश्य वे हैं जिन्हें शीघ्रता से प्राप्त किया जा सकता है। इसके अर्थ को स्पष्ट करते हुये **एन०सी०ई०आर०टी०** ने 'मूल्यांकन एव परीक्षा अंक' में लिखा है—"प्राप्य उद्देश्य वह बिन्दु अथवा अभीष्ट परिवर्तन है, जिसकी दिशा में कार्य किया जाता है अथवा प्राप्य उद्देश्य वह व्यवस्थित परिवर्तन है जिसे क्रिया द्वारा प्राप्त किया जाता है अथवा जिसके लिये हम क्रिया करते हैं।"

"An objective is a point or end in view of something towards which action is directed, a planned for charge sought through any activity what we set out to day." ***—NCERT***

उक्त परिभाषा के अनुसार प्राप्य उद्देश्य के अन्तर्गत निम्न तीन मुख्य बिन्दु आते हैं—

(1) दिशा (Direction)

(2) व्यस्थित परिवर्तन (Planned Changes)

(3) क्रिया (Activity)

इसके अर्थ को अधिक स्पष्ट करते हुये **कार्टर पी० गुड** ने कहा है, "प्राप्य उद्देश्य वह मानदण्ड या लक्ष्य है जिसको छात्र द्वारा विद्यालय क्रिया को पूर्ण करके प्राप्त किया जा सकता है।"

Scanned by TapScanner

"Objective is a standard or goal to be achieved by the pupil when the work in the school activity is completed."

—***Cater V. Good***

प्राप्य उद्देश्य के अर्थ को **कार्टर वी० गुड** ने स्पष्ट करने हेतु एक और परिभाषा दी है—

"प्राप्य उद्देश्य छात्र के व्यवहार में वह इच्छित परिवर्तन है जो विद्यालय द्वारा पथ-प्रदर्शित अनुभव का परिणाम होता है।"

"Objective is a desired in the behaviour of pupil is a result of experience directed by school." —***Cater V. Good***

इस प्रकार प्राप्य उद्देश्यों में व्यावहारिकता अधिक होती है। दूसरे, इसको प्राप्त कराने का दायित्व शिक्षक का होता है।

उद्देश्य (लक्ष्य) तथा प्राप्य उद्देश्य में अन्तर

(DIFFERENCE BETWEEN AIM AND OBJECTIVE)

इन दोनों के अन्तर को निम्नलिखित तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

	उद्देश्य/लक्ष्य	प्राप्य उद्देश्य
1.	उद्देश्य अनिश्चित एव अस्पष्ट होते हैं।	प्राप्य उद्देश्य निश्चित एवं स्पष्ट होते हैं।
2.	उद्देश्य दीर्घगामी होते हैं, जो व्यक्ति को उच्चता की ओर अग्रसरित करते हैं।	प्राप्य उद्देश्य अल्पगामी होते हैं।
3.	उद्देश्य व्यक्तिष्ठ होते हैं।	प्राप्य उद्देश्य वस्तुनिष्ठ होते हैं।
4.	उद्देश्य अप्रत्यक्ष (Indirect) होते हैं।	प्राप्य उद्देश्य प्रत्यक्ष (Direct) होते हैं।
5.	उद्देश्य औपचारिक (Formal) होते हैं।	प्राप्य उद्देश्य कार्यपरक (Functional) होते हैं।
6.	यह सीखने वालों (Learner) को स्पष्ट शिक्षा-निर्देशित नहीं प्रदान करता है।	यह सीखने वालों को या छात्रों को निश्चित एवं स्पष्ट निर्देश प्रदान करता है।
7.	उद्देश्य एक सामान्य कथन है।	प्राप्य उद्देश्य एक निश्चित कथन है।

Scanned by TapScanner

8.	उद्देश्य व्यापक (Broad) होते हैं।	प्राप्य उद्देश्य विशिष्ट (Specific) होते हैं।
9.	उद्देश्य प्राप्त करने के लिये लम्बी अवधि की आवश्यकता होती है।	प्राप्य उद्देश्य की कम अवधि में प्राप्त कर लिया जाता है।
10.	उद्देश्य में आदर्शवादिता होती है। अतः इसे पूर्णरूप से प्राप्त करना सम्भव नहीं है। इसकी प्राप्ति हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती है।	प्राप्य उद्देश्य का आधार मनोविज्ञान होता है। प्राप्य उद्देश्य की प्राप्ति सम्भव है क्योंकि उसमें व्यावहारिकता होती है, दूसरे शब्दों में प्राप्य उद्देश्य प्राप्यनीय है।
11.	प्राप्य उद्देश्य 'उद्देश्य' में ही निहित होते हैं। अतः इनकी प्राप्ति का दायित्व मात्र शिक्षक पर ही होता है।	उद्देश्य की प्राप्ति के लिये सम्पूर्ण विश्व, समाज एवं राष्ट्र उत्तरदायी होते हैं।
12.	उद्देश्य का उदाहरण विद्यार्थियों में व्यावसायिक कुशलताओं, रुचियों, दक्षताओं, क्षमताओं तथा निपुणता के गुणों को उत्पन्न करना है।	प्राप्य उद्देश्य का उदाहरण छात्रों में चिन्तन एवं व्यावसायिक कुशलता एवं क्षमता का विकास करना, आर्थिक वातावरण में व्यापारिक सम्बन्धों में दृढ़ता लाना है।

Scanned by TapScanner